मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

BSKS–191

स्नातक उपाधि कार्यक्रम (सामान्य) संस्कृत

(बी. ए. जी. एस. के. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

बी.एस.के.एस.-191 : भारतीय वास्तुकला प्रणाली

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) इस प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं।*

(ii) तीनों खण्ड अनिवार्य हैं।

खण्ड—क

1. अधोलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए— $3\times15=45$

(i) क्षेत्रमादौ परीक्ष्येत गन्धवर्णरसप्लवैः।

सुमध्वाज्यान्नपिशितं गन्धं विप्रानुपूर्वकम्॥

अथवा

छिन्द्याद्यदि न तरूस्तान् तदन्तरे पूजितान् वपेदन्यान्।

पुन्नागाशोकारिष्टबकुलपनसान् शमीशालौ च॥

(ii) प्रागुत्तरोन्नते धनसुतक्षयः सुतवधश्च दुर्गन्धे।

वक्रे बन्धुविनाशो न सन्ति गर्भाश्च दिङ्मूढ़े॥

अथवा

समचतुरस्त्रो रुचको वज्रोऽष्टास्त्रिद्विवज्रको द्विगुणः।

द्वात्रिंशता तु मध्ये प्रलीनको वृत्त इति वृत्तः॥

(iii) तान्यशुचिभाण्डकीलस्तम्भाद्यैः पीडितानि।

शल्यैश्च गृहभर्तुस्तत्तुल्ये पीडामृङ्गे प्रयच्छन्ति॥

अथवा

नवभागं गृहं कृत्वा पञ्चभागं तु दक्षिणे।

त्रिभागं वामतः कृत्वा शेषे द्वारं प्रकल्पयेत्॥

खण्ड-ख

नोट : *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$3 \times 10 = 30$

2. द्वारवेध के फल के विषय में विस्तृत विवेचन कीजिए।
3. एकाशीतिपदवास्तुमण्डल को स्पष्ट कीजिए।
4. गृह की ऊँचाई के सन्दर्भ में 'वास्तुसौख्यम्' ग्रन्थ में क्या बताया गया है ? वर्णन कीजिए।

5. भौमप्रमाणादि से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट रूप से उल्लेख कीजिए।

खण्ड—ग

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणी लिखिए—

$5 \times 5 = 25$

(i) राजगृह का प्रमाण

(ii) वास्तु का प्रयोजन

(iii) दिक् साधन की आवश्यकता

(iv) गृहमेलापक विचार

(v) पंचचतुश्शालगृह

(vi) गवाक्षादि विचार

× × × × ×